आधारभूत सामग्री

गुजरात में उपलब्ध हिन्दी और गुजराती साहित्य का मध्यकाल ‡14 वी शताब्दी से 19 वी शताब्दी‡ सैकड़ों कवियों की रचनाओं से अलंकृत और समृद्ध है । कई कवि ऐसे हैं जिन्होंने सैकड़ों और हजारों की संख्या में मुक्तक रचनाओं का लेखन किया है । विभिन्न संस्थाओं ने इन कवियों की विविध रचनाओं को प्रकाशित करने के प्रयत्न किए हैं । फलत: उन कवियों की वाणियों के सैकड़ों संकलन उपलब्ध है । यहाँ उन्हीं ग्रन्थों का विवरण दिया जा रहा है जिनमें कवि की वाणियाँ प्रकाशित की गई है क्योंकि हमारा उद्‌देश्य है मध्यकालीन गुजरात में उपलब्ध हिन्दी और गुजराती साखियों का तुलनात्मक अध्ययन । एक ही कवि के साहित्य को विभिन्न संस्थाओं ने अपने उद्‌देश्य के अनुरूप प्रकाशित किया होने के कारण उस कवि की रचनायें विभिन्न ग्रन्थों में संकलित की गई है । अत: जिस कवि की रचनाओं को "बृहत् काव्य दोहन" के भागों में संकलित किया गया है उसी कवि की रचनाओं को "प्राचीन काव्य माला", "भजन सार सिन्धु" तथा ऐसे ही अन्य ग्रन्थों में भी संकलित किया गया है ।

हमारे द्वारा गृहीत गुजरात के कवियों की वाणी की आधारभूत सामग्री का अधिकांश अभी अज्ञात एवं अप्रकाशित है । यहाँ - ‡अ‡ प्रकाशित और ‡ब‡ अप्रकाशित दोनों प्रकार की सामग्री का परिचय दिया जा रहा है । मेरे लेखन में जिन प्रकाशित ग्रन्थों से सहायता मिली उनका उल्लेख प्रथम दिया है :-

"अ" विभाग -

‡1‡ बृहत् काव्य दोहन - भाग 1 से 8 तक.

‡2‡ प्राचीन काव्य माला - 1 से 36 तक.

‡3‡ भजन सागर - ‡छोटा और बड़ा‡

‡4‡ अध्यात्म भजन माला.

‡5‡ सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभिन्न कवियों की वाणियाँ.

"बृहद् काव्य दोहन" मध्यकालीन गुजराती साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण काव्य संकलन ग्रंथ है । इसके अन्तर्गत् प्राचीन एवं मध्यकालीन प्रख्यात एवं अप्रख्यात कवियों के काव्यों का संग्रह करने का विचार स्वर्गीय सूर्यराम इच्छाराम देसाईजी ने किया । सुरत में रहते समय उनके मन में इस ग्रंथ की रचना की इच्छा हुई । इस काव्य ग्रन्थ के दस भाग हैं । इस ग्रन्थ के अन्तर्गत अनेक कवियों की रचनायें निहित हैं । इसके प्रत्येक भाग में कम से कम छ: कवि हैं । इन कवियों की मुख्य रचनाओं को संग्रह करके भिन्न-भिन्न अध्याय तैयार किए गए हैं । 12 से 14 वर्ष के अन्तराल में प्रत्येक के 400 पृष्ठ सहित बृहद् काव्य दोहन के छ: भाग प्रस्तुत किए गए । इस काव्य की प्रसिद्धि जनसमाज के द्वारा हुई है क्योंकि उनको गुजरात के साहित्य की अमूल्य निधि अति अल्प मूल्य में सुलभ हो रही थी । छ: भागों के प्रकाशित होने के बाद लोगों का उत्साह दूसरी तरफ आकृष्ट हो गया फलत: इस ग्रंथ के संग्रहकर्ता का उत्साह कम हो गया । अत: अन्य दो ग्रन्थ कुछ समय के पश्चात् ही प्रकाशित करने का विचार करना पड़ा । साहित्य परिषद की दूसरी सभा बम्बई में हुई और उसमें तय किया गया कि बृहद् काव्य दोहन के और दो भाग भी प्रकाशित होने चाहिए । अत: इसके दो भाग एक साथ छापकर तैयार किए गए । आठों भाग इच्छाराम सूर्यकान्त देसाईजी द्वारा संपादित है, सभी भागों में हिन्दी व गुजराती की उपलब्ध रचनाओं को एक ही लिपि - गुजराती में प्रकाशित किया गया है । प्रत्येक भाग के अनेक संस्करण हुए हैं और वे भी एक ही संस्था की ओर से प्रकाशित हैं ।

§1§ बृहद् काव्य दोहन भाग-1
संपादक - इच्छाराम सूर्यराम देसाई
स॰ - 1925 सातवीं आवृत्ति ।

§2§ बृहद् काव्य दोहन भाग-2
स॰ - 1913 आवृत्ति तीसरी ।

§3§ बृहद् काव्य दोहन भाग-3
स॰ - 1903 दूसरी आवृत्ति ।

(4) बृहत् काव्य दोहन भाग-4

स॰ - 1947 चौथी आवृत्ति ।

(5) बृहत् काव्य दोहन भाग-5

स॰ - 1950 छट्ठी आवृत्ति ।

(6) बृहत् काव्य दोहन भाग-6

(7) बृहत् काव्य दोहन भाग-7

(8) बृहत् काव्य दोहन भाग-8

स॰ - 1969 सातवीं आवृत्ति ।

बृहत् काव्य दोहन के प्रथम भाग में भक्त कवि प्रेमानन्द की कुछ साखियाँ हैं । इनका समय है सं॰ 1700 से 1790

ई॰सन् 1644 से 1734

ये बड़ौदा के निवासी थे । इन्होंने "ओखहरण" के कड़वु 10 वु॰ में राग सामेरी के अन्तर्गत् एक साखी लिखी है । साखी लिखने के पूर्व एक वलणा है और अन्त में साखी के साथ 10 वाँ कड़वा समाप्त किया है । इसी कवि ने 20 वे कड़वे में राग मारू के अन्त में एक साखी लिखी है । इन साखियों की भाषा गुजराती है तथा ये अध्यात्म भाव को निरूपित करनेवाली साखियाँ हैं । बृहत् काव्य दोहन के इसी भाग में ही कवि रत्नों द्वारा लिखी साखियाँ उपलब्ध हैं । महिना शीर्षक के अन्तर्गत् 14 अमूल्य साखियाँ हैं ।

प्रथम भाग में प्रीतमदास की भी भक्तिपरक साखियाँ हैं । इनका समय है ई॰स॰ 1724 से ई॰स॰ 1798 तक । "गुरू महिमा" नामक छन्द के आरम्भ ही में गुरू को नमस्कार करके साखी लिखी है । उसके आठ चरण है । इस छन्द के अन्त में भी आठ चरणों की साखी है । "ज्ञानमास" के अन्तर्गत 14 साखियाँ हैं । प्रत्येक मास का आरम्भ साखी से किया है ।

बृहद् काव्य दोहन के दूसरे भाग में (जो भाग आठ के साथ युक्त है) भक्त कवि देवीदास द्वारा रचित भक्तिभाव संपूर्ण साखियाँ हैं । इन साखियों की भाषा शुद्ध गुजराती है ।

बृहद् काव्य दोहन के चौथे भाग में प्रीतमदास द्वारा रचित "सरस गीता" के अन्तर्गत् अनेक साखियाँ हैं । ये वही प्रीतम हैं जिनका संदर्भ हमें प्रथम भाग में मिलता है । प्रत्येक विश्राम के अन्त में चार चरण में लिखी गई दो-दो साखियाँ हैं । प्राय: प्रत्येक साखी गुजराती में है । इस प्रकार 19 साखियाँ हैं ।

बृहद् काव्य दोहन के सातवें भाग में राजे भगत द्वारा लिखित "श्री कृष्णों रास" नामक काव्य में कवि ने काव्य का आरम्भ ही साखी से किया है । प्रत्येक साखी के मध्य एक-एक चाल लिखकर काव्य का सौन्दर्यवर्धन किया है ।

प्राचीन काव्य माला -

श्री सयाजीराव के राजकाज सम्भालने के दस वर्ष के बाद (ई॰ 1885) बड़ौदा शहर से "प्राचीन काव्य त्रैमासिक" नामक पुस्तिका प्रकाशित होने लगी । हरगोविंददास कांटावाला और श्रीनाथा शंकर शास्त्री इसके संपादक थे । पुस्तिका में प्राचीन गुजराती कवियों के अप्रकट 36 काव्य को प्रसिद्ध किया गया । श्री कांटावाला शिक्षा विभाग के अध्यक्ष थे । अत: गुजरात भर में अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों और रचनाओं को प्रकाशित करने के लिए महाराजा का ध्यान आकर्षित किया और महाराजा ने कुछ रकम मंजूर की । तीन वर्षों में 20 पुस्तकें इस "प्राचीन काव्य माला" नाम से प्रकाशित की गईं । कुछ काव्यों का प्रकाशन बाकी था और रकम समाप्त होने के कारण काम स्थगित हो गया । कुछ समय उपरान्त महाराजा द्वारा रकम देने पर पुन: प्रकाशन कार्य आरम्भ हुआ पुन: 5 और प्राचीन काव्य प्रकाशित हुए । कुछ काव्य इस प्रकार कालान्तर में प्रकाशित होते गये और सम्पूर्ण काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ ।

इन काव्य मालाओं में दयाराम, धिरा भगत, वीरजी, प्रेमानन्द, भोजा भगत आदि भक्तों की रचनायें संकलित हैं । ये कवि हमारी सूची में हैं परन्तु इनके द्वारा रचे गए अख्यान काव्य, पुराण, प्रश्नोत्तर आदि हमारे अध्ययन में नहीं है । अतः हमने इन कवियों की उन्हीं रचनाओं को लिया हैं जो हमारे अध्ययन से संबंधित है ।

सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय गुजरात की एक ख्याति प्राप्त संस्था है जिसके द्वारा गुजरात में अनेक लुप्त प्रायः और अमूल्य साहित्य का उद्धार समय-समय पर होता रहा है । समाज उन संत कवियों द्वारा परिचित हुआ जिनकी रचनाओं ने समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है । प्रस्तुत संस्था द्वारा प्रकाशित भक्ति साहित्य ने समाज को सच्ची राह दिखाने में महत्वपूर्ण योग दिया हैं । यहाँ संस्था के प्रतिनिधि आलोच्य ग्रन्थों का परिचय दिया गया है ।

प्रीतम नी वाणी :

पुस्तक के अन्तर्गत प्रीतमदासजी द्वारा रचित अनेक रचनाओं का संपादन किया गया है । जिनमें से कवि द्वारा रचित साखियाँ मेरे अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई । इस पुस्तक का प्रकाशन समय है ई॰स॰ 1962 ।

भजन सार सिन्धु :

इस ग्रन्थ के अन्तर्गत पद, भजन, साखी आदि का समावेश है । इस पृथ्वी पर अमृत तुल्य भक्तिरस का उदय भक्तों के हृदय में हो तथा भक्तों को इस ग्रन्थ से लाभ हो । यही इस ग्रन्थ के सम्पादक का मूल उद्देश्य था ।

इस ग्रन्थ के प्रथमावृत्ति के प्रगटकर्ता माण्डणभाई रामजी थे । द्वितीयावृत्ति के प्रगटकर्ता जीवराम माडणभाई हैं । इस ग्रन्थ का प्रकाशन समय ई॰स॰ 1927 है । प्रथमावृत्ति की लोकप्रियता को देखकर सम्पादक ने द्वितीयावृत्ति के प्रकाशन का विचार किया । द्वितीयावृत्ति में प्रथमावृत्ति के सम्पूर्ण कवि

-यों की रचनायें तथा अनेक नये कवि और उनकी रचनाओं का प्रकाशन एक साथ हुआ । प्रथमावृत्ति में हुई भूलों का सुधार तथा सुन्दर पदों, भजनों गरबा आदि को एकत्रित करके इसमें समाहित किया गया है । इस ग्रन्थ के प्रकाशक अम्बालाल शानाभाई पटेल हैं जिन्होंने इसे "दी बम्बे फाईन आर्टस प्रिंटिंग वर्क्स" से प्रकाशित किया है ।

इस ग्रन्थ के अन्तर्गत निम्नलिखित कवियों की रचनायें समाहित हैं :- प्रथम भाग का आरम्भ मंगलाचरण से हुआ है ततपश्चात् अग्रदास, सुखीभगत, अर्जुनदास, अलख बुलाखी आदिराम, अनन्दघन, आशाराम, इच्छाराम, ईश्वरदास, ईश्वर बारोट, कबीर कल्याण कानपुरी, कालीदास, कृष्णाराम, कैवल खीम साहब, गिरिधर, गेमलजी, गोपालदास, नरसिंह मेहता, छोटम, जीवन, देवो आदि अनेक कवियों की रचनायें हैं । दूसरे भाग में आत्माराम, थोभाण, [illegible], कवि दलपतराम, पुरूषोत्तम, पीताम्बर, मूलदास, बल्लभ आदि रचनायें समाहित हैं ।

उपरोक्त कवियों में से कुछ आलोच्य कवियों की रचनायें उपलब्ध है । "नरभेराम" हमारे कवि तालिका में नहीं है परन्तु उनकी बहुमूल्य साखियाँ द्रष्टव्य हैं । नरभेराम ने "राग बारमासी" पद का आरम्भ साखी से किया है । प्रत्येक पद के उपरान्त एक साखी लिखने की परम्परा को निभाते हुए कवि ने सोलह पद और साखियाँ लिखी हैं ।[1]

कवि रत्नों हमारी सूची के अन्तर्गत हैं । उनकी गुरू वन्दना से ओत-प्रोत साखियाँ हृदयग्राही है । "वार महिना" शीर्षक के अन्तर्गत 13 साखियाँ लिखी हैं जिनमें प्रत्येक महीने के लिए उपयुक्त शब्दावली लिखकर कवि ने अपनी कला कौशल का परिचय दिया है ।[2]

---

(1) भजन सार सिन्धु (पृ. 419)

(2) भजन सार सिन्धु (पृ. 820)

कुछ बहुमूल्य साखियाँ कवि प्रीतम की इस ग्रन्थ में उपलब्ध हैं । इसमें कवि ने सद्गुरू की वन्दना का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए यह स्पष्ट किया है कि इससे दुःख कष्टों का नाश होता है ।[1]

परिचित पद्यसंग्रह :

गोधरा के संत भगतजी महाराज की प्रेरणा से इनके कुछ भक्तों ने ई.स. 1924 में यह संग्रह प्रकाशित किया । इसकी दूसरी आवृत्ति कुछ समय पश्चात् अहमदाबाद के सत्संग मंडल की तरफ से "प्रेमप्रसादी" नाम से प्रकाशित हुई । इसकी तीसरी आवृत्ति ई. 1945 में संशोधन के पश्चात् कुछ नये भजनों को जोड़कर "परिचित पद्यसंग्रह" नाम से प्रकाशित हुई । इस पुस्तक के अन्तर्गत् अनेक कवियों को शामिल किया गया है । यह पुस्तक अमूल्य है ।

संत भक्तों की अनुभूति हमारी अमूल्यनिधि हैं । अखा, प्रीतम, छोटय, नरसिंह मेहता आदि की मूल्यवान रचनायें इस ग्रन्थ में संग्रह की गई है । इस ग्रंथ के अन्तर्गत् अखा, अमीधर महाराज, अरजण महाराज, स्वामी आत्मानंद, अंभाराम, उपेन्द्र, उका भगत, कबीर, कैवलदास, खीमदास, जीवणदास, जेठीदास, त्रिकम साहेब, दयाराम, देवासाहब निरांत प्रीतम आदि कवियों की रचनायें हैं । "सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद" से यह संग्रह प्रकाशित किया गया ।

---

[1] भजन सार सिन्धु (पृ. 61)

छोटम नी वाणी :

प्रस्तुत पुस्तक के तीन भाग हैं । और इसके तीसरे भाग में छोटमजी द्वारा रचित अनेक साखियाँ हैं । इन साखियों का उपयोग हमने अपने अध्ययन कार्य में किया है । यह साखियाँ उपदेशात्मक और अध्यात्मभाव से पूर्ण हैं । इस पुस्तक का प्रकाशन ई.स. 1929 में हुआ ।

गुजराती कहेवत संग्रह अने प्राचीन दोहराओ अने साखियों :

इस ग्रंथ के प्रकाशक भिक्षु अखंडानंदजी है । इसमें कहावत और दोहराओं के साथ-साथ जन समाज में साखी कहने की परम्परा का भी प्रमाण मिलता है । इस ग्रन्थ का प्रकाशन समय ई.स. 1955 है । इसमें मुख्यत: कहावत के रूप में प्रयुक्त होनेवाली साखियों का संकलन है ।

अध्यात्म भजनमाला भाग 1 तथा 2 :

गुजरात के प्रसिद्ध काव्य प्रेमी काहनजी धर्मसिंह द्वारा अध्यात्म भजन माला भाग 1 और 2 प्रकाशित हुआ । इनमें भक्त कवियों द्वारा रचित भजन, पद, साखी आदि का संकलन किया गया है । इसके प्रथम भाग के प्रकाशित होने पर भक्त-जनों की उत्सुकता को ध्यान में रखकर संपादक के द्वारा द्विगुण उत्साह से दूसरे भाग के लिए भजन-साखी आदि का संग्रह कार्य किया जाने लगा तथा "सत्संग-शिरोमणी" नाम जोड़कर इस ग्रन्थ का प्रकाशन कार्य सम्पन्न किया गया । इसका प्रकाशन समय है ई.स. 1903 ।

अध्यात्म भजन माला भाग-1 में 116 संत कवियों की रचनाओं का समावेश हैं और अध्यात्म भजन माला भाग-2 में 171 कवियों की रचनाओं का समावेश है । इनमें से भक्त कवि अमरदास की मूल्यवान पाँच साखियाँ उपलब्ध है । भक्त कवि जगन्नाथ द्वारा रचित 11 साखियों में कवि ने महिनों के उल्लेख के साथ-साथ भगवत भजन और ज्ञानोपयोगी विषयों का समावेश किया है ।

नटवर भजनावली :

इस ग्रन्थ को छपवाने के लिए राजसिंह त्रिकमजी चौहान ने गोरधनदास वाधेला को दिया और इस ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य में बाबुभाई, भगवानजी भाई, कान्तिलाल तथा बवमगर ने वाधेलाजी की सहायता की । इस ग्रन्थ का प्रकाशन समय है ई. 1945 । इय ग्रन्थ जीर्ण अवस्था में होने के कारण इसमें केवल 150 कवियों के नाम तथा उनकी रचनायें उपलब्ध हो सकी । इस ग्रन्थ का आरम्भ भजन से हुआ है तदुउपरान्त तुलसीदास द्वारा रचित कुछ मूल्यवान साखियाँ समाहित है । तुलसीदास हमारे कवि तालिका में नहीं हैं अत: उनकी साखियों को हमने नहीं लिया है ।

भक्त कवि रतनदास रचित कुछ मूल्यवान साखियाँ हैं । धिरोजी द्वारा रचित भजन के बीच-बीच में साखियाँ हैं । मूलदास द्वारा रचित साखियाँ भी भजनों के मध्य है जिससे भजनों की महत्ता में वृद्धि होती है । गंगाराम नामक एक संत की महत्त्वपूर्ण साखियाँ भी इस ग्रन्थ में उपलब्ध हैं ।

उदाधर्म पंचरत्न माला :

राम - कबीर सम्प्रदाय "उदाधर्म" नाम से प्रख्यात है । इस धर्म का प्रसार गुजरात के कानय, पाल आदि विभागों के आस-पास है । इस धर्म के मुख्य गुरु ज्ञानीजी महाराज हैं जिन्होंने कबीरजी से साक्षात् किया था । ज्ञानीजी के पश्चात् जीवनजी महाराज नामक महान संत ने इनकी गद्दी सम्भाली जिन्होंने इस धर्म सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया । इनके द्वारा रची गई अनेक रचनाएं आज भी पुनिआद, मोटीसांझा आदि स्थानों के ग्रन्थ भंडारों में सुरक्षित है । सम्प्रदाय के वर्तमान गादीपति स्वामी जगदीशचन्द्र महाराज हैं । इनके पास दर्जनों कवियों की सैकड़ों रचनायें सुरक्षित हैं । उन्हीं के द्वारा सम्पादित "उदाधर्म पंचरत्न माला" के अन्तर्गत जीवनजी महाराज तथा अन्य अनेक महान संतों द्वारा रचित साखियाँ मेरे अध्ययन कार्य में सहायक सिद्ध हुईं । इस ग्रंथ का प्रकाशन समय ई.स. 1908 है ।

उदाधर्म भजन सागर :

रामकबीर सम्प्रदाय के इस द्वितीय पुस्तक के अन्तर्गत अनेक भजनों के मध्य, पदों के मध्य तथा स्वतंत्र रूप से भी साखी लिखी हुई मिलती हैं। इस ग्रंथ का प्रकाशन समय ई.स. 1985 है।

गरबा तथा लगन नां किर्तन :

उदाधर्म की इस तृतीय पुस्तक के संपादक उदाधर्म के महाराज श्री यदुनाथ जगन्नाथजी पुनिपाद वाले हैं। इसके अन्तर्गत उदाधर्म के भक्तगण द्वारा लिखी गई अनेक साखियाँ उपलब्ध हैं। इन साखियों का एक विशिष्ट महत्व इसलिए है कि साखियों का गरबा के आरम्भ में, भजन के आरम्भ में तथा कीर्तन आदि के बीच-बीच में लिखने का जो प्रघात है उसका अनुसरण किया गया है। मेरे अध्ययन की अनेक महत्त्वपूर्ण साखियाँ इस पुस्तक से उपलब्ध हुई है।

महात्मा देवा साहब कृत राम सागर :

कच्छ के हमला स्थान के देवा साहब एक स्वानुभवी और समन्वयवादी भक्त कवि थे। उनका जन्म, दीक्षा मृत्यु की तिथियाँ अज्ञात है परन्तु विभिन्न संत-परम्पराओं तथा सम्प्रदायों के अध्ययन के अनुसार उनका कार्यकाल ई.स. 1794 से ई.स. 1844 रहा होगा। उनका "अथ साखी लिख्यते" के उल्लेख से एक ऐसा साखी ग्रन्थ उपलब्ध है जिसमें विभिन्न अंगों में सोरठा, दोहरा का प्रयोग किया गया है। ग्रंथ के प्रारम्भ में "अथ साखी लिख्यते" लिखा है किन्तु विभिन्न अंगों में प्रतिपाद्य विषय को साखी, दोहा, सोरठा आदि में प्रस्तुत किया गया है। इनकी साखियाँ मेरे अध्ययन कार्य में उपयोगी सिद्ध हुई।

रविभाण सम्प्रदाय की वाणी :

प्रस्तुत वाणी संग्रह के सम्पादक मंछाराम मोतीजी हैं । इस पुस्तक के अन्तर्गत रवि साहब की बहुमूल्य साखियाँ विभिन्न अंगों में विभाजित हैं । इस पुस्तक का प्रकाशन समय ई. स. 1936 है ।

गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी :

इस वाणी संग्रह के संपादक डॉ. अम्बाशंकर नागर तथा सहयोगी संपादक डॉ. रमणलाल पाठकजी हैं । इस ग्रंथ का प्रकाशन समय है ई. स. 1969 । इस ग्रन्थ के अन्तर्गत् अनेक कवियों द्वारा रची गई बहुमूल्य हिन्दी रचनाओं का संग्रह किया गया है । निम्नलिखित कवियों की साखियों का प्रकाशन इस पुस्तक के अन्तर्गत् हुआ है ।

भक्त कवि लालदास, गबरीबाई, जीता मुनी नारायण, संतराम महाराज, कुबेरदास, करूणासागर । प्रस्तुत ग्रंथ में जिन कवियों की साखियाँ संकलित की गई हैं उनकी मूल कृतियों को पढ़कर मैंने शेष साखियों का भी अध्ययन किया है । जिसका विवरण तत् = तत् कवि के परिचय में यथास्थान दिया गया है ।

माणेकलाल शंकरलाल राणा सुरत के रहने वाले हैं । संतों और भक्तों की रचनायें संपादित कराके उसे प्रकाशित करना उनका प्रधान जीवन कार्य रहा है । ज्ञात एवं अज्ञात कई संतों, कवियों और महात्माओं की वाणियों का प्रकाशन कार्य किया है । इनकी पुस्तकें ज्ञानवर्धक, धार्मिक कथाओं तथा संतों द्वारा किये गए कार्य उनके उपदेश तथा उनकी शिष्य परम्परा का पूर्ण विवरण देती है । हमारे अध्ययन कार्य की अधिकांश साखियाँ इनकी पुस्तकों से उपलब्ध हुईं । इन्होंने अपनी पुस्तकों में न केवल साखियों का समावेश किया है बल्कि पद, लावणी, भजन तथा किर्तनों को भी स्थान दिया है । उन्होंने सुरत प्रदेश में स्थित अनेक संतों की वाणियों का संग्रह करके उनका जन समाज में प्रचार करने का सत्प्रयत्न किया है । इनकी पुस्तक में न केवल सुरत के कवियों का ही समावेश हुआ है अपितु आस-पास के अनेक प्रसिद्ध संतों की रचनाओं का भी समावेश हुआ है । माणेकलाल राणाजी ने इन संतों की वाणियों का संकलन कराकर एक

समाज हितैषी व्यक्ति का परिचय दिया है । निम्नलिखित पुस्तकें उनके द्वारा संपादित तथा लिखित हैं जिनको हमने अपने अध्ययन में आधारभूत सामग्री के रूप में स्थान दिया है ।

संत तेजानंद स्वामी :

इस पुस्तक का प्रकाशन समय है ई.स. 1969 । इसके अन्तर्गत अनेक भक्त कवियों की बहुमूल्य साखियाँ हैं । संत तेजानंदजी ‌ई.स. 1856 - ई.स. 1624‌ एक मस्त भजनिक संत थे । इन्होंने विपुल संतवाणी की रचना की है । परन्तु अभी तक इनकी रचनाओं का सम्पूर्ण प्रकाशन नहीं हुआ है । इनके वाणी संग्रह से कुछ रचनायें ही प्राप्त हो सकी जिनके अन्तर्गत इनके द्वारा रचित कुछ बहुमूल्य साखियाँ हैं । इनकी शिष्य परम्परा भी विशाल है एवं उन शिष्यों द्वारा रचित अनेक साखियाँ उपलब्ध है । खेमानन्द, चेतनस्वामी, श्रीरंग स्वामी, गेमलदास, याकुतखान आदि शिष्यों की अनेक भक्तिपरक साखियाँ उपलब्ध है जो मेरे अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई हैं ।

संत निर्वाण साहेब :

माणेकलाल राणा द्वारा रचित इस पुस्तक का प्रकाशन समय ई.स. 1972 है । संत कवि निर्वाण साहेब ई.स. 1481 से ई.स. 1514 एक सिद्ध पुरुष थे । इन्होंने अपने उपदेशों द्वारा जनता में भक्ति और ज्ञान का प्रसार किया । समय के साथ-साथ इनकी रचनायें दुर्लभ होने लगी थी अतः इनकी कुछ उपलब्ध रचनाओं का संग्रह करके उनका प्रकाशन कार्य खुशालदास चुनीलाल राणा ने किया । इस पुस्तक के अन्तर्गत अनेक साखियाँ हैं जो मेरे अध्ययन कार्य में सहायक हुई । संत कवि जंभाराम, ध्यानी संत आभाराम, भक्त कवयित्री अन्नपूर्णा आदि अनेक शिष्य भक्त कवियों की भी साखियाँ इस ग्रंथ में मिलती हैं ।

संत निर्मलदास जी :

इस पुस्तक का संपादन कार्य भी माणेकलाल राणाजी ने किया । इसके अन्तर्गत संत निर्मलदास (ई.स. 1766 से ई.स. 1879) तथा उनके शिष्य प्रशिष्यों की फुटकल अनेक साखियाँ पद तथा भजन हैं । ये साखियाँ मेरे अध्ययन कार्य में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई । इस पुस्तक का प्रकाशन समय ई.स. 1978 है ।

संत भाभाराम ना पावन प्रसंगों :-

संत भाभाराम (ई.स. 1449 से 1523) की वाणियों का सम्पादन कार्य श्री माणेकलाल राणाजी ने किया । भाभाराम द्वारा रचित अनेक साखियाँ इसमें उपलब्ध है जो मेरे अध्ययन कार्य में सहायक सिद्ध हुई । इस ग्रन्थ के अन्तर्गत भाभाराम के शिष्य गंगासिंह गोहिल, मेधावती, भोजराज बारैया लुटारा, कीकी बाई आदि की उपदेशात्मक रचनायें उपलब्ध हैं । इस ग्रन्थ में भाभाराम द्वारा रास-गरबा, पद, साखी, भजन आदि समाहित हैं । हिन्दी में रचित इनकी साखियाँ सारगर्भित उपदेशात्मक और भगवतोपदेश से परिपूर्ण हैं ।

माणेकलाल राणाजी के निजी एवं अप्रकाशित संग्रह से भी कुछ भक्त कवियों की साखियाँ मुझे मिली है जिनके नाम हैं भक्त कवयित्री प्रेमाबाई, बाबा लोचन स्वामी, अनवर खान, भक्त कवि गुलाबदास, भक्त कवयित्री ओखा, हरजीवनदास, संत कंवल दास, संत चेतन स्वामी आदि । इनकी रचनायें हस्तलिखित रूप में हैं ।

दयाराम रसथाल :

मध्यकालीन गुजराती साहित्य के प्रमुख एवं अंतिम कवि दयाराम ने रसथाल की रचना की है । इस ग्रंथ के अन्तर्गत स्वयं कवि द्वारा रचित अनेक बहुमूल्य साखियाँ मिलती हैं । उनका रसथाल ग्रंथ ही साखी दूहा से लिखा है । इसके प्रकाशक "भक्त कवि श्री दयाराम स्मारक समिति डभोई" है । इस ग्रंथ का प्रकाशन समय ई.स. 1945 है । ये साखियाँ मेरे अध्ययन कार्य में सहायक सिद्ध हुई ।

श्री परमानन्द प्रकाश पदमाला :

इस ग्रन्थ के सम्पादक और प्रकाशक रजनीकान्त जेठालाल पटेल हैं । इस ग्रन्थ की तीसरी आवृत्ति 1974 में हुई । इस ग्रन्थ में मोतीदास द्वारा रचित कुछ साखियाँ हैं तथा अन्त में फुटकल रूप में 102 मूल्यवान साखियाँ मिलती हैं । मोतीदासजी हमारे समय सीमा में नहीं आते अतः उनको हमने अ हमारे कवियों में शामिल नहीं किया है । परन्तु फुटकल रूप में उपलब्ध साखियों को हमने यथास्थान प्रयोग किया है । इस ग्रन्थ में 97 कवियों की रचनायें समाहित हैं ।

"ब" विभाग

अप्रकाशित वाणी

विभिन्न स्थानों से उपलब्ध अप्रकाशित वाणी :-

(1) मगनभाई आशाभाई भोज से प्राप्त एक पुरानी हस्तप्रत

(2) भारतीय विद्या भवन, बम्बई

(3) पुनिपाद रामकबीर मंदिर के श्री जगदीश महाराज से उपलब्ध

(4) गुजरात विद्या सभा अहमदाबाद से प्राप्त हस्तप्रत

(5) फार्वस गुजराती सभा बम्बई

(6) व्यक्ति विशेष के पास से

(7) कवि गिरधर -
(1787 ई. से 1846 ई. तक) कृत रचनायें ।

.....

मगनभाई आशाभाई भोज से प्राप्त एक पुरानी हस्तप्रत में उपलब्ध साखियों का विवरण :-

क्रमांक	अनुक्रमणिका				
1.	गोडी नी साखी	..	गुजराती	पृ.	81
2.	लाचरण नी साखी	..	गुजराती	पृ.	89 + 90
3.	रास नी साखियो	..	गुजराती	पृ.	104
4.	मारू नी साखियो	..	गुजराती	पृ.	121
5.	सोरठ नी साखियो	..	गुजराती	पृ.	139
6.	सामेरी नी साखियो	..	गुजराती	पृ.	155
7.	केदार नी साखियो	..	मिश्रभाषा	पृ.	169
8.	राम पंथी नी साखियो	..	हिन्दी	पृ.	189
9.	राग बसंत नी साखियो	..	मिश्रभाषा	पृ.	271

भारतीय विद्या भवन, बम्बई :-

10.	साखी चाल	..	हिन्दी	पृ.	55 + 57
11.	गौडी साखियो	..	गुजराती	पृ.	78 (अ)
12.	समेरी नी साखी	..	हिन्दी	पृ.	82 (अ)
13.	मारू साखी	..	गुजराती	पृ.	90 (अ) + 91
14.	सोरठ साखी	..	गुजराती	पृ.	95 (अ)
15.	रामग्नी नी साखी	..	गुजराती	पृ.	102 - 102 (अ)
16.	साखी	..	गुजराती	पृ.	145

पुनिपाद राम कबीर मंदिर के श्री जगदीश महाराज से उपलब्ध हस्तप्रतों में प्राप्त कवि और उनकी साखियों का विवरण

17. वैष्णव नानादास नी साखी
    लिपिक - भगत भगवानदास.. गुजराती

18. वैष्णव जीवणदास नी साखी
    अने दुहा .. गुजराती

19. राग सामेरी साखी
    कर्ता - माधोदास .. मिश्रभाषा पृ. 30 - 39

20. श्री साखी रामधनासी
    नरसिंह मेहता .. गुजराती पृ. 96 - 97

21. साषी केदारो
    नरसिंह मेहता .. गुजराती पृ. 97 - 99

22. श्री राग सामेरी नी साखी
    कृष्णदास .. गुजराती पृ. 99 -100

हस्तप्रत न. 30 नाना पारेख
नी साखी
रामकबीर मंदिर पुनिपाद

23. साखी
    नाना पारेख .. हिन्दी पृ. 7 - 22

24. साखी
    वृन्दावन महाराज नी
    लखी छे .. हिन्दी पृ. 22 - 22 (अ)

25. अथ श्री साखी लखी छे .. मिश्र पृ. 1-11 ।अ।

26. नार ना वैष्णव नी साखी
नानादास .. हिन्दी पृ. 1 - 15

गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद से प्राप्त हस्तप्रत

27. साखी संग्रह
ज्ञानी, दुर्लभ

28. साखी संग्रह
खौजी, दासा

29. साखी संग्रह
परसराम

30. साखी संग्रह
कलूजी

फार्बस गुजराती सभा, बम्बई से प्राप्त हस्तलिखित साखी ग्रंथों की सूची :-

31. रास की साखी .. ब्रजभाषा पृ. 1 - 10
32. चौपदी साखी .. अखो हिन्दी पृ. 1 - 102
33. साखी .. गुजराती
34. साखी .. गुजराती

फार्बस गुजराती सभा, बम्बई से प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची में कुछ साखियों के उल्लेख मिलते हैं ।· सूची के संपादक है श्री अम्बालाल बुलाखीराम जानी । इस सूची के 69 वें पृष्ठ पर अखा द्वारा लिखी गई 647 साखियाँ उपलब्ध हैं । पोथी का नाम है "अखा जी ना छप्पा" इस

पोथी में कुछ और भी साखियाँ हैं पर उनकी साखियों की संख्या नहीं बताई गई है । इसी सूची का दूसरा भाग स. 1929 में छपा है । संपादक श्री अम्बालाल बुलाखीराम जानी हैं । इसमें कुछ एक कवियों की गुजराती तथा हिन्दी साखियाँ हैं । 71 क्रमांक के हस्तलिखित ग्रंथ के 8वें पृष्ठ में दयाराम की गरवी के मध्य साखी है ।

साखी "ज्ञानी जी" की अप्रकाशित हस्तप्रत का प्राप्ति स्थान पुनियाद राम कबीर मंदिर है । संग्राहक जगदीश स्वामीजी हैं । इस हस्तप्रत में ज्ञानीजी की साखियों के विभिन्न 38 अंग हैं । इसके अन्तर्गत खोजी जी की साखी, कालुजी की साखी, कबीरजी की साखी, रैदासजी की साखी आदि अनेक भक्ति परक रचनायें हैं ।

डॉ. योगेन्द्र त्रिपाठीजी के पास से उपलब्ध वस्तविश्वम्भर की हस्तप्रत के आधार पर भी मैंने अनेक साखियों का अपने अध्ययन कार्य में समावेश किया है । इनकी साखियों की संख्या 2641 हैं ये साखियाँ विभिन्न 88 अंगों में विभाजित हैं । इन साखियों की भाषा हिन्दी, गुजराती तथा हिन्दी और गुजराती मिश्र है । प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना का समाप्ति काल संवत् 1831 फाल्गुन है वद शनिवार है ।

वैष्णव कवि गिरिधर कृत अप्रकाशित साखियों की हस्तलिखित प्रत डॉ0 रमणलाल पाठकजी के निजी संग्रह से प्राप्त हुई है । कवि गिरिधर की अमूल्य साखियाँ मेरे शोध कार्य में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई । ये कवि गिरिधर पुष्टि संप्रदाय के प्रतिनिधि.कवि दयाराम के समकालीन थे । ये बड़ौदा में रहते थे ।

आधारभूत सामग्री का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् परवर्ती अध्यायों में हम गुजरात में हिन्दी का उद्भव और विकास की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे ।